वाणिज्य शिक्षण में मूल्यांकन-प्रक्रिया का प्रयोग (Use of Evaluation Process in Economics Teaching)—वाणिज्य के शिक्षक को मूल्यांकन-प्रक्रिया के निम्नलिखित सोपानों का अनुसरण करना पड़ता है—

(A) वाणिज्य शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण—इस सोपान के अन्तर्गत शिक्षक को वाणिज्य शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण करना पड़ता है।

उदाहरण–

पाठ्य-वस्तु—सामुदायिक जीवन एवं सामुदायिक विकास योजनायें।

Scanned by TapScanner

शिक्षण-उद्देश्य—इस पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं, जिनका मूल्यांकन करना है—

(1) ज्ञान उद्देश्य (Knowledge Objective)—बालकों को ग्रामीण एवं शहरी समुदायों के संगठन, राष्ट्रीय विस्तार-सेवा क्षेत्रों के संगठन, विभिन्न विकास खण्डों एवं उनके अधिकारियों तथा उनके कार्यों आदि के विषय में ज्ञान प्रदान करना।

(2) कौशल उद्देश्य (Skill Objective)—बालकों में साक्षात्कार करने, आँकड़े या सामग्री एकत्र करने, ग्राफ एवं तालिकाओं को पढ़ने एवं बनाने आदि से सम्बन्धित कौशलों का विकास करना।

(3) अभिवृत्ति उद्देश्य (Attitude Objective)—बालकों को श्रम के महत्व और समुदाय की अर्थव्यवस्था को नियोजित ढंग से परिवर्तित करने की आवश्यकता का अनुभव कराना।

(4) रुचि उद्देश्य (Interest Objective)—बालकों में अपने विद्यालय तथा समुदाय में सुधार के लिये योजना के निर्माण में रुचि जाग्रत करना।

(B) शिक्षण उद्देश्य के अनुकूल अध्ययन-अध्यापन क्रियाओं का निर्धारण—शिक्षक शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये अध्ययन-अध्यापन क्रियाओं का निर्धारण करेगा। यह इनके अनुकूल शिक्षण-पद्धतियों एवं प्रविधियों—योजना पद्धति, व्याख्यान विधि, प्रश्न-प्रविधि, सहायक सामग्री, भारत में राष्ट्रीय विस्तार-सेवा क्षेत्रों एवं विकास खण्डों से सम्बन्धित आँकड़ों से सम्बन्धित चार्ट, मानचित्र में उनका वितरण आदि शैक्षिक उपकरणों, अध्यापन बिन्दुओं आदि का निर्धारण करके कक्षा में उपयुक्त स्थिति का निर्माण करेगा।

(C) वाणिज्य शिक्षा के आधार पर बालकों में होने वाले व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन—शिक्षक वांछित व्यवहारों के मूल्यांकन के लिये विभिन्न मूल्यांकन प्रविधियों का प्रयोग करेगा। इन वांछित व्यवहारों के आधार पर वह अपने शिक्षण-उद्देश्यों की प्राप्ति का अनुमान लगा सकता है। उपर्युक्त प्रकरण की दृष्टि से शिक्षक निम्नलिखित प्रविधियों का प्रयोग कर सकता है—

(1) निरीक्षण (Observation),

(2) मौखिक परीक्षा (Oral Test),

(3) लिखित परीक्षायें (Written Tests)—निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ।

(4) प्रयोगात्मक कार्य (Practical Work)—ग्राफ, चार्ट तथा मानचित्र का निर्माण।

मूल्यांकन की प्रविधियाँ (Techniques of Evaluation)—मूल्यांकन प्रविधि वह प्रविधि है, जिसके द्वारा बालक के ज्ञान एवं व्यवहार में हुए परिवर्तनों तथा उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं की जाँच की जाती है। **डॉ० बी० एस० ब्लूम** के शब्दों में, "अच्छी मूल्यांकन प्रविधि वह है, जिसमें व्यवहार के वांछित परिवर्तन के वैध परिणामों को प्राप्त करने की क्षमता हो।" बालक के व्यवहार में हुये परिवर्तनों को किसी एक प्रविधि द्वारा जाँचा नहीं जा सकता है, अपितु उसकी जाँच करने के लिये विभिन्न

Scanned by TapScanner

प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है। अतएव मूल्यांकन में विभिन्न प्रविधियों का समावेश है। इस सम्बन्ध में राइटस्टोन ने लिखा है, "आधुनिक मूल्यांकन में जाँच की विधि रीतियाँ, उपलब्धि, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व, चरित्र-सम्बन्धी परीक्षण, क्रम-निर्धारण, प्रश्नावली, प्रतिफलों के निर्णय मान, साक्षात्कार, नियंत्रित-निरीक्षण रीतियाँ, समाजमिति रीतियाँ तथा घटनावृत्तों का प्रयोग होता है।" यहाँ हम मूल्यांकन की कुछ रीतियों का उल्लेख कर रहे हैं—

(1) निरीक्षण प्रविधि (Observation Technique)—इसके द्वारा भी शिक्षक छात्रों का मूल्यांकन कर सकता है। निरीक्षण के द्वारा शिक्षक छात्रों की रुचि, सामाजिक कुशलताओं, सहानुभूति आदि विभिन्न गुणों का मूल्यांकन कर सकता है। शिक्षक द्वारा छात्र का निरीक्षण कर खेल के मैदान तथा छात्रों के क्रियाकलापों के अन्य स्थानों पर किया जा सकता है। छात्रों का निरीक्षण करते समय शिक्षक का दृष्टिकोण उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिये। शिक्षक द्वारा छात्रों की जिन बातों का निरीक्षण किया जाए, उसका लेखा उसे निश्चित, निष्पक्ष एवं सही रूप में रखना चाहिये और छात्र की प्रगति तालिका में अंकित कर देना चाहिये।

(2) प्रश्नावली प्रविधि (Questionnaire Technique)—प्रश्नावली प्रविधि का प्रयोग अनुसंधान के प्रमाणों का मूल्यांकन करने के लिये किया जा सकता है। यह विधि अत्यन्त सरल एवं उपयोगी है। इसके माध्यम से शिक्षक छात्रों की रुचियों तथा अभिवृत्तियों के विकास से सम्बन्धित सूचनायें प्राप्त कर सकता है। इस विधि का प्रयोग करते समय यह ध्यान में रखना चाहिये कि प्रश्न अनुसंधान के परिणामों से सम्बन्धित हों। इसके अतिरिक्त प्रश्नों को सरल तथा एक निश्चित क्रम में होना चाहिये।

(3) साक्षात्कार (Interview)—मूल्यांकन की इस विधि का प्रयोग सबसे पहले हुआ विद्यालय के अध्यापकों द्वारा छात्रों का साक्षात्कार कर, अनुसंधान के प्रमाणों के विषय में उनके विचारों को जाना जा सकता है। इस विधि द्वारा छात्रों की रुचियों के विकास, दृष्टिकोणों में हुए परिवर्तनों तथा विभिन्न व्यक्तिगत विशेषताओं का मूल्यांकन किया जा सकता है।

(4) पड़ताल-सूची (Check-List)—पड़ताल-सूची द्वारा अनुसंधान के परिणामों का मूल्यांकन किया जा सकता है। इसमें कुछ सूचियाँ तैयार कर, विद्यालय से सम्बन्धित व्यक्तियों को उनकी जाँच के लिये दे दिया जाता है। समस्याओं की सूची में लोगों से उन समस्याओं की जाँच करने को कहा जाता है, जोकि उन पर लागू होती हैं। समस्या की इस सूची को पड़ताल-सूची (Check List) कहा जाता है। यह व्यक्तिगत तथा सामान्य समस्याओं को ज्ञात करने का सबसे सरल साधन है।

(5) अभिलेख (Records)—छात्रों की डायरियाँ, शिक्षकों द्वारा तैयार किये गये घटना तथा संचित अभिलेख-पत्र भी मूल्यांकन की महत्वपूर्ण प्रविधियाँ हैं।

(6) रेटिंग स्केल (Rating Scale)—रेटिंग स्केल विधि भी मूल्यांकन की अत्यन्त उपयोगी विधि है। इस विधि में कुछ विशेष गुणों की सूची दी जाती है और मूल्यांकन करने वाले को गुणों की रेटिंग करने के लिये कहा जाता है। रेटिंग स्केल के दो रूप हो सकते हैं—(क) पंच (Five Points), तथा (ख) सप्तपदी (Seven

Scanned by TapScanner

Points)। पंचपदी रेटिंग स्केल में पाँच वर्ग होते हैं—(1) सर्वोत्तम, (2) उत्कृष्ट, (3) औसत, (4) औसत से कुछ कम, (5) निकृष्ट। इस विधि में जिस व्यक्ति को समस्याओं की सूची दी जाती है, उसे उन्हीं पाँच वर्गों में से कहीं रेटिंग करनी होती है। सप्तपदी रेटिंग स्केल में रेटिंग के लिये सात वर्ग होते हैं—(1) सर्वोत्तम, (2) अति उत्तम, (3) उत्तम, (4) सामान्य, (5) निकृष्ट, (6) निकृष्टतर, और (7) निकृष्टतम।

(7) छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुयें (Pupils' Products)—छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुयें भी उनके व्यवहार एवं रुचि सम्बन्धी सूचनायें प्राप्त करने के लिये महत्वपूर्ण साधन प्रदान करती हैं।

(8) परीक्षा प्रविधि (Examination Technique)—इस विधि के अन्तर्गत मौखिक परीक्षायें, प्रयोगात्मक परीक्षायें, निबन्धात्मक परीक्षायें तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षायें सम्मिलित हैं। अध्यापक इन परीक्षाओं का प्रयोग स्वयं कर सकते हैं। मूल्यांकन की दृष्टि से इनमें वस्तुनिष्ठ परीक्षण सबसे अधिक उपयोगी है।

मूल्यांकन के उद्देश्य

(Aims of Evaluation)

(1) किस उद्देश्य की प्राप्ति, किस सीमा तक हुई है, इसका विश्वसनीय ज्ञान भी, मूल्यांकन प्रक्रिया के द्वारा ही सम्भव है।

(2) शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में अपेक्षित सुधार के लिये विश्वसनीय जानकारी प्रदान करना भी मूल्यांकन का एक प्रमुख उद्देश्य है।

(3) मूल्यांकन प्रक्रिया के आधार पर विद्यार्थियों की भावी उपलब्धियों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकती है।

(4) मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा, छात्रों में निहित योग्यताओं के सम्बन्ध में वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त होती है।

(5) मूल्यांकन प्रक्रिया, छात्रों को अप्रत्यक्ष रूप में, परिश्रम करने और समुचित रीति से अधिगम करने की दिशा में प्रेरित करती है।

(6) शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर प्रदत्त ज्ञान की सीमा भी इस प्रक्रिया द्वारा ज्ञात की जा सकती है।

(7) छात्रों को शैक्षिक और व्यावसायिक दृष्टि से निर्देशन प्रदान करने में भी यह प्रक्रिया सहायक है।

(8) इसके माध्यम से शिक्षण के विभिन्न अंगों के दोषों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है।

(9) मूल्यांकन प्रक्रिया अधिगम की दिशा में छात्रों को प्रेरित करने में भी सहायक है।

(10) छात्रों के व्यवहार सम्बन्धी विभिन्न परिवर्तनों अथवा उनके विकास की जाँच, मूल्यांकन प्रक्रिया द्वारा ही सम्भव है।

Scanned by TapScanner